श्रेष्ठ समाज के लिए नैतिक, आध्यात्मिक एवं मानव मूल्य प्रेरित

शिक्षा दर्पण

शिक्षा प्रभाग की त्रैमासिक समाचार पत्रिका | मई - 2023 | ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू (राज.)

1

2

1. **Gyan Sarovar (Mount Abu):** Hon'ble Shri Dr. Mahesh Sharma, MP, Lok Sabha inaugurated the **University & College Educators' Conference** at Gyan Sarovar. Also present were Hon'ble Prof. Dr. Mukesh Kumar Verma, Vice Chancellor, Chhattisgarh Swami Vivekanand Technical University, Bhilai; Prof. Ramesh K. Goyal, Vice Chancellor, Pharmaceutical Science and Research University, New Delhi; Rajyogini Dr. Nirmala Didi; Rajyogi BK Mruthyunjaya; Rajyogini B.K. Sheilu; Rajyogi Dr. B.K. Pandiamani & others.

2. **Shantivan (Abu Road):** Inauguration of the **1st Convocation Ceremony** of the Value Education Courses offered by the Brahma Kumaris and Manipur International University in joint collaboration with each other. Present were Hon'ble Dr. Hari Kumar, Chancellor, MIU; Hon'ble Dr. R.K. Singh, VC, Patliputra University, Patna; Rajyogini B.K. Sudesh Didi; Rajyogi Dr. B.K. Mruthyunjaya; Dr. B.K. Pandiamani & others.

संरक्षक
राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर
महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़ एवं संरक्षक, शिक्षा प्रभाग
परामर्श दाता
राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय
कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़ एवं अध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग
राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू बहन
उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग
कार्यकारिणी
राजयोगिनी ब्र.कु. सुमन
राष्ट्रीय संयोजिका, शिक्षा प्रभाग
डॉ. ब्र.कु. पांड्यामणि
निदेशक, मूल्य और आध्यात्मिक शिक्षा कोर्स
ब्र.कु. शिविका
मुख्यालय संयोजिका, शिक्षा प्रभाग
डॉ. आर.पी. गुप्ता
मुख्यालय संयोजक, मूल्य शिक्षा पाठ्यक्रम
प्रधान सम्पादक
डॉ. ब्र.कु. ममता
संयोजिका, शिक्षा प्रभाग, अहमदाबाद, गुजरात
सह सम्पादक
ब्र.कु. चुनेश, शान्तिवन, आबू रोड
प्रकाशक
एज्यूकेशन विंग (RERF) एवं ब्रह्माकुमारीज़
प्रकाशन
ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, शान्तिवन, आबू रोड
डिजाइनिंग सेटिंग
ब्र.कु. चुनेश, शान्तिवन, आबू रोड

अमृत सूची

- **सम्पादकीय** - परिवर्तन की शिक्षा
- University and College Educators' Conference on **Educators - The Architects of Future Generation**
- Youth for Global Peace
- Graduation Day of Tamil University, Thanjavur
- आध्यात्मिक पढ़ाई से होगा संस्कारों का विकास
- MoU Signing with TNTEU
- पांच दिवसीय राजयोगी किड्स विंटर कार्निवाल का आयोजन
- तीन दिवसीय शिक्षा प्रभाग का राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न
- Glimpses of Education Wing Services in Different Places
- MoU with Rotary India Literacy Mission
- राजयोग एवं स्वास्थ्य जीवनशैली
- मोहिनी दीदी और जयंती दीदी को डॉक्टरेट की उपाधि से नवाजा गया
- कविता - **प्रार्थना**
- कविता - **मैं पढ़ रहा हूँ**

निवेदन

शिक्षा प्रभाग के सेवा समाचार फोटो सहित तथा स्व-रचित कविता, गीत, लेख इत्यादि एज्यूकेशन ऑफिस, आनंद भवन, शान्तिवन, आबू रोड के पते पर भेजकर अपना सहयोग प्रदान करें।

E-mail: educationwing@bkivv.org
Mobile Nos.: +91 94140-03961 / +91 94263-44040

डॉ. ब्र.कु. ममता
संयोजिका, शिक्षा प्रभाग, सुख शान्ति भवन (अहमदाबाद)

सम्पादकीय

डॉ. ब्र.कु. ममता शर्मा

परिवर्तन की शिक्षा

शिक्षा संस्कारों का सिंचन करती है। शिक्षा से समाज का सुचारू रूप से संचालन होता है। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के साथ श्रेष्ठ व्यवहार करता है। वह शिक्षा की बदौलत है। प्रत्येक युग में शिक्षा से ही परिवर्तन संभव हुआ है। जड़ और चेतन की पहचान शिक्षा से ही होती है। जो व्यक्ति शिक्षित नहीं होता, उसे लोग 'गंवार' जैसे शब्दों की उपमा देते हैं और जो शिक्षित होता है उन्हें लोग 'ज्ञानी' कहते हैं। संस्कारी कहते हैं।

प्राचीन समय से शिक्षा का ही महत्व है। शिक्षा ही सर्वोच्च स्थान पर रही है। वैदिक काल के समय में जीवन के चार आश्रम थे। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। प्रत्येक चरण या आश्रम का लक्ष्य उनके आदर्शों को पूरा करना था। यही मनुष्य का धर्म या कर्तव्य था। प्राचीन समय की शिक्षा परिवर्तन की शिक्षा थी। कम उम्र से ही व्यक्ति को नैतिकता, आत्म-संयम, बुद्धिमत्ता, व्यावहारिकता, प्रेम, करुणा और अनुशासन आदि मूल्यों के बारे में सिखाया जाता था। जहाँ व्यक्ति और समाज दोनों बेहतर थे। परन्तु समय जैसे-जैसे बीतता गया, शिक्षा व शिक्षण दोनों की ही पद्धति में परिवर्तन आता गया। आज व्यक्ति शिक्षा लेने के बाद शिक्षित होता है। प्राचीन समय में व्यक्ति दीक्षित होता था। समय के साथ शिक्षा का स्वरुप भौतिक हो गया है। जहाँ अर्थ को महत्व मिला। आर्थिक रूप से सम्पन्न बनने के लक्ष्य के चलते व्यक्ति ने अपनी आन्तरिक गरिमा को खो दिया है। आज के समय में 'गूगल गुरू' बन गया जो सिर्फ यांत्रिक ज्ञान देने वाला, एक उपकरण के माध्यम से जानकारी देता है। वर्तमान समय में गुरू (शिक्षक) और शिष्य की परंपरा भी न के बराबर हो गई है। भौतिकता से सम्पन्न समय में वर्तमान में ऐसे ही छात्र और शिक्षक के बीच के संबंधों में भी परिवर्तन होने लगा है। वर्तमान समय तो स्कूली शिक्षा भी ऑनलाइन पढ़ाई जा रही है। शिक्षक बोलता जाता है, पढ़ाता जाता है और छात्र सुनते और सिर्फ सुनते हैं। यहाँ छात्र और शिक्षक के बीच में वार्तालाप भी नहीं हो पाता। मात्र सन्देश के माध्यम से व्यवहार हो रहा है। ऐसी शिक्षा प्रणाली से छात्र दीक्षित तो क्या शिक्षित भी नहीं हो पा रहा है। समय तीव्र गति से सरकता जा रहा है और ऐसे समय में सभी दिशाहीन हो गए हैं। शिक्षा पद्धति को और भी प्रभावी बनाने के लिए सरकार की ओर से नई-नई शिक्षा नीतियों को बनाया जाता है। परन्तु उसको लागू करने की दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाये जा रहे हैं। ऐसे समय में एक ज्ञान दीपक जलना चाहिए क्योंकि वर्तमान समय में शिक्षा पद्धति में एक ठोस परिवर्तन की आवश्यकता महसूस हुई है।

यह ज्ञान दीपक जलाने के लिए स्वयं सर्वोच्च सत्ता परमपिता परमात्मा शिक्षक बनकर राजयोग की शिक्षा के माध्यम से न केवल हमें शिक्षित कर रहे हैं परन्तु दीक्षित भी कर रहे हैं। अब यह विश्व ड्रामा परिवर्तन हो रहा है। आज मनुष्य में जिन 5 महाविकारों ने प्रवेश कर लिया है। उन्हें समाप्त करने के लिए स्वयं परमात्मा परम शिक्षक बन हमें ज्ञान देने के लिए आये हैं। उन्हें पहचानने की आवश्यकता है। यह वही कल्प पहले वाला ज्ञान यज्ञ है। इस ज्ञान यज्ञ की रोशनी से समग्र विश्व चमक जायेगा। महा-परिवर्तन होगा। परमात्मा द्वारा दी गई इस शिक्षा के माध्यम से ही स्व-परिवर्तन के पुरुषार्थ द्वारा विश्व परिवर्तन होगा। यह जीवन मूल्यों की शिक्षा, आध्यात्म की शिक्षा हमें मनुष्य से देवत्व की ओर ले जाएगी। आज परिवर्तन की बेला में स्वयं परमात्मा द्वारा मानव परिवर्तन की शिक्षा से कलियुग से सतयुग, मानव से देवता बनाने का भगीरथ कार्य चल रहा है। इस परिवर्तन की शिक्षा से मानव मूल्यवान बनेगा तथा आध्यात्मिक बल से मानव व समाज दोनों का ही परिवर्तन होगा। मनुष्य फिर से जागेगा और परिवर्तन के इस श्रेष्ठ कार्य में स्वयं परिवर्तित होकर सतयुगी दुनिया में अपने श्रेष्ठ भाग्य को सुनिश्चित करेगा। महान कार्यों में अपनी बुद्धि को लगायेगा और सहजता, सरलता से इन्हीं शिक्षाओं से सम्पूर्ण विश्व का महा-परिवर्तन होगा।

University and College Educators' Conference on

Educators – The Architects of Future Generation

A 4-day College and University Educators' Conference on the theme "Educators – The Architects of Future Generation" was inaugurated on April 15, 2023 at the Gyan Sarovar Campus of Brahma Kumaris, Mount Abu. About 450 delegates participated in the conference including 14 Vice Chancellors, Deans, College Principals, Professors, etc. along with other educators. The conference started quite enthusiastically as this conference happened after 4 years (due to COVID) and most of the participants were eagerly waiting to discuss the fruitful and positive changes that can be brought about in the education system.

The conference was very well structured and divided into 5 Sessions, 2 Talks, Success Stories and Rajyoga Meditation Sessions.

The Reception and Inaugural Sessions were attended by Hon'ble Shri Dinesh Kumar Jain, Member, Lokpal of India, Hon'ble Shri Dr. Mahesh Sharma, MP, Lok Sabha, Prof. B.J. Rao, Prof. Dr. Mukesh Kumar Verma, Prof. Dipendra Nath Das, Prof. Ramesh K. Goyal, Prof. Nagalapalli Nagaraju, Mr. Yermal Harish Shetty, Rajyogini Dr. Nirmala Didi, Rajyogi B.K. Karuna, Rajyogi BK Mruthyunjaya, Rajyogini B.K. Sheilu, Rajyogi Dr. B.K. Pandiamani and others.

During the reception and the inaugural sessions, the speakers emphasized the need of structured value-based syllabus in the current education system. The current modern education uses high technology and modern facilities but it is missing the key values of love, compassion, co-operation, understanding and humility. The speakers agreed on the same thought that the youth today is in need of love, compassion and peaceful atmosphere rather than the competitive environment and the ocean of information flooded around them, which is going on since a couple of centuries. **So, the architects of the future generation should bring about a new education system wherein students will be called educated not only with degrees and certificates but will also be the enlightened human beings and ready for the future. Education should, as well, provide students the possibilities for inner awakening, and develop their inner strength and stability to face the challenging times.** India, being the most ancient country with glorified culture, ethics and values, should provide the new model for the whole world by introducing the value-based education in all the educational institutes. This new education policy can be the beginning of the new era in the world of education all over the globe.

The 1st Session of the conference was conducted by Prof. B.K. Mukesh on the topic "**Holistic Well-Being of Educators**". This session focussed on the importance of developing the spiritual well-being of the educators and hence, developing their 8 powers including the power to tolerate, power to face, power to discriminate, power to judge, power to decide, power to accept etc. The speaker also emphasized on the importance of having satopradhan food, healthy sleep

and stopping the use of alcohol, cigarettes and drugs.

The next session was on "**Values - The Building Blocks of Life**" by Dr. Tankeshwar Kumar and Dr. Rohitkumar N. Desai. It was emphasized that it is important to develop the virtue of being compassionate and humble in order to develop a healthy society. When we change, the world changes. The children should be taught the spiritual knowledge in order to have a greater nation.

The third session was taken by B.K. Kiran, Dr. Milind Pande and Commander Dr. Bhushan Dewan on "**Educators as Inspirational Leaders**".The main outcome from this session was that children should be made emotionally strong, by being non-judgmental on them, as they all are spiritual beings, the children of the God. To build strong personality traits, the educators have to become their mother, father, friend etc., just how the supreme being descends on the earth when we are completely weak and we can forge all relationships with him.

In the 4th session, titled "**Wisdom for Learning, Living and Leading**", B.K. Kreena, Dr. Kalagouda B. Gudasi and Prof. B.S. Satyanarayana holded the stage. It was emphasized that wisdom comes as we grow old if we learn from our and others' life experiences. Learn and experience as much as possible from the Rajyoga taught by Brahma Kumaris to lead a peaceful life, and hence, make the world peaceful.

The 5th session was taken by Dr. B.K. Mamata, Prof. Rajbir Singh and Prof. (Dr.) S.B. Sharma on the topic "**Education for an Empowered Future**", in which main focus was on highlighting the importance of adding value education in all the educational institutes, at all the levels, to inculcate the spirituality among the youth. Emphasis was given on the advantages of opening a **Rajyoga Thought Lab,** a unique concept by Brahma Kumaris for the mental development and well-being of the students of universities and colleges. Brahma Kumaris' Rajyoga Thought Labs have been already running in various colleges of India and have benefitted a lot to the students in all walks of their lives!

Along with the above 5 sessions, 2 talks were also arranged during the conference, one by Dr. Aditi Singhal and other by Prof. E.V. Gireesh.

Dr. Aditi Singhal gave a talk on "**Impact of Consciousness in Life**". She said-

"Transform the two words 'I' and 'Mine', and be soul conscious to develop the innate qualities of the soul like love, peace, purity and power."

Prof. E.V. Gireesh gave a talk on "**Art of Conscious Teaching**". He said -

"Teach the importance of life to the students, which is to be happy in whatever we do, be peaceful in whatever situation we are, and be loveful to everyone on this planet as everyone is a spiritual being."

There was a session kept on **"Success Stories**", in which Sister B.K Chitra gave an introduction to Rajyoga Thought Lab, where students can work on mind and thoughts, can pause the mind and channelize the thoughts in the positive directions to achieve better results at school, better behavior at home and school. Later, live examples and success stories of the students who have benefitted from the Rajyoga Thought Lab were also shared.

Morning Rajyoga Meditation Classes

Introductory Rajyoga Meditation classes were kept every morning for all 4 days of the conference. These classes helped delegates understand the basics of Rajyoga Meditation, and also helped them remain active for the whole day.

3 MOUs were signed

It was a great pleasure to have MOUs signed by the Brahma Kumaris with 3 different universities as mentioned below, during the conference, in the presence of Rajyogi Dr. B.K. Mruthyunjaya and Dr. B.K. Pandiamani:

1. Hemchandracharya North Gujarat University, Patan
2. Central University of Haryana, Mahendergarh
3. MIT World Peace University, Pune

Meditation Session at Dadi Janki Park

On 3rd Sunday of every month, all the students of the Brahma Kumaris, across the world, do meditation from 6:30 pm – 7:30 pm for world peace. So on April 16th, the 3rd Sunday of the month, every participant of the conference joined for the World Peace Meditation at Dadi Janki Park in Gyan Sarovar. At the end of the meditation, all of them created a thought for themselves that they want to imbibe in their lives.

Overall, the 4-day program was greatly appreciated by all the delegates who participated in the conference and everyone's face was reflecting a feeling of inner contentment and happiness. Very positive feedback have been received from everyone on all the sessions kept during the conference.

YOUTH FOR GLOBAL PEACE

A Special Initiative - **YOUTH FOR GLOBAL PEACE** was organised by Brahma Kumaris, Madurai Sub Zone to enable the youth physically, mentally, socially, spiritually in current challenges and to harness their inherent capabilities to overcome the problems prevailing in the world.

The project was launched by Rajyogi Dr. BK Mruthyunjaya, Executive Secretary, Brahma Kumaris, Mt. Abu and Rajyogini BK Chandrika Didiji, Vice-Chairperson, Youth wing, Dr. BK Pandiamani, Director, Value Education Programmes in presence of Dr. M.K. Shanmugasundaram, IAS, Additional Director General of Foreign Trade, Mr. K. Palani Kumar, Deputy Commissioner (Crime), Madurai. Rajyogini B.K. Meenakshi, Director, Brahma Kumaris, Madurai Sub Zone gave her greetings.

Under this project, programs such as online webinars, youth dialogues, competitions, youth challenges through social media, etc. will be held to motivate the youth towards positive lifestyle and engage them in social services.

Launching of **"Emergence Journal of Science and Spirituality"** duing University & College Educators' Conference held in August at Brahma Kumaris Manmohinivan Campus, Abu Road.

Rajyoga Thought Lab, JECRC, Jaipur organised an exclusive talk on **"Overcoming Overthinking"** by BK EV Gireesh Ji on 27th April, 2023. More than 450 students along with faculty members participated and gained valuable insights from the session. After the session, more than 150 students had enrolled for offline meditation course.

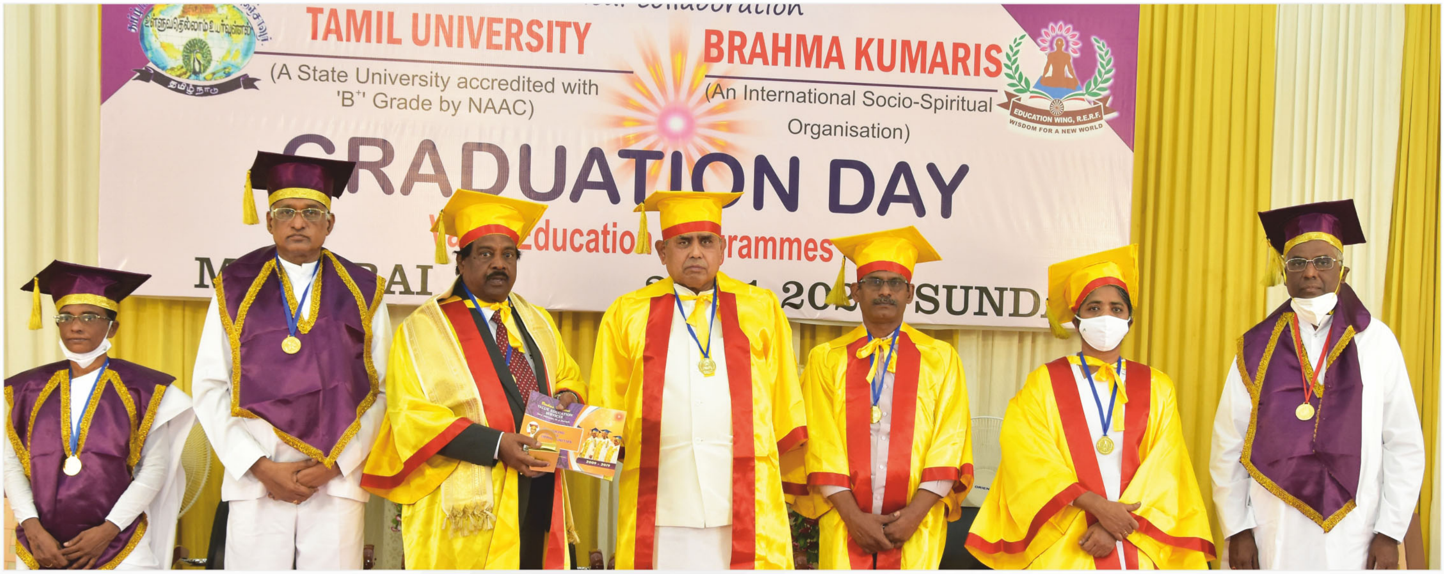

Graduation Day of Tamil University, Thanjavur

The Graduation Day of Tamil University, Thanjavur was held at Brahma Kumaris, Madurai in collaboration with the Education Wing of Brahma Kumaris.

The programme was attended by Prof. Dr. M. Krishnan, Vice-Chancellor, MK University, Madurai, Dr. T. Shivakumar, Controller of Examination, Tamil University, Thanjavur and Dr. B.K. Pandiamani, Director, VES, Mount Abu. Rajyogi Dr. BK Mruthyunjaya, Chairman, Education Wing, RERF, Mount Abu motivated the students to instill values and spirituality in their life.

Rajyogini B.K. Gnanasoundari, Sister In-charge, Value Education Programmes, Tamil University, Thanjavur welcomed the guests, while Rajyogini B.K. Meenakshi, Director, Brahma Kumaris, Madurai Sub Zone gave her blessings. Also present were B.K. Padmanaban, Co-ordinator, Value Education Programmes, Tamil University, Thanjavur, Rajyogi B.K. Jayakumar, HOD, Tamil Dept., Godlywood Studio, Mt. Abu and Rajyogini B.K.Uma, Co-ordinator, Brahma Kumaris, Madurai Sub Zone. Diploma Certificates were issued to the students at the end of both the programmes.

आध्यात्मिक पढ़ाई से होगा संस्कारों का विकास

शांतिवन (आबू रोड)। यूपी के गजरौला स्थित नागेश्वराव विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. राजीव त्यागी ने कहा कि भौतिक शिक्षा के साथ आध्यात्मिक मूल्यों की पढ़ाई ने कोरोना काल की परिस्थितियों में आध्यात्मिकता की पावर को उबारने में मदद की है। नागेश्वराव विश्वविद्यालय समूह के सभी संस्थानों में 50 हजार से ज्यादा विद्यार्थी इससे लाभान्वित हुए हैं।

उन्होंने आगे कहा कि जिन बच्चों ने इस आध्यात्मिक पढ़ाई को जीवन में अपनाया, उन विद्यार्थियों के संस्कारों और सकारात्मक शैली का विकास हुआ है। मेरा लक्ष्य है कि विश्व के कई देशों में इस शिक्षा को प्रचार-प्रसार करने का प्रयास करूंगा। ब्रह्माकुमारी संस्था का शिक्षा प्रभाग इस क्षेत्र में लगातार प्रयास कर रहा है।

शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष बीके मृत्युंजय को नागेश्वराव विश्वविद्यालय की ओर से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर बीके मृत्युंजय ने कहा कि 2 वर्ष पूर्व नागेश्वराव विश्वविद्यालय तथा ब्रह्माकुमारी संस्था के शिक्षा प्रभाग के बीच मूल्य आधारित डिप्लोमा और डिग्री कोर्स का समझौता हुआ है। यह पढ़ाई अधिकतर विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। इसके साथ ही कई विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों में यह पढ़ाई का कोर्स चलाया जा रहा है।

ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके संतोष ने मोमेंटो भेंटकर डॉ. राजीव त्यागी को सम्मानित किया। रूड़की के गोपाल नरसन ने कहा कि मैं जब से ब्रह्माकुमारी संस्था से जुड़ा हूं, तब से जीवन में सकारात्मक बदलाव आया है। जीवन में बदलाव का इससे बढ़िया दूसरा कोई रास्ता नहीं है। इस दौरान वैल्यू एज्यूकेशन के डायरेक्टर डॉ. पांड्यामणि समेत कई लोग उपस्थित थे।

"ब्रह्माकुमारीज़ डोंबिवली सेवाकेंद्र (घाटकोपर सबज़ोन, मुंबई) द्वारा 13 से 23 अप्रैल, 2023 तक 11 दिवसीय समरकैंप का आयोजन किया गया जिसमें 170 बच्चों ने भाग लिया।"

MoU Signing with TNTEU

Thursday, 16th September, 2021 an MoU was signed by Education Wing, RERF (Mt.Abu) - Adyar branch with Tamil Nadu Teachers Education University (TNTEU).

As per the Memorandum of Understanding, the Education Wing of RERF (Adyar) will offer course on "Rajayoga Meditation" in collaboration with TNTEU as part of their Para Curricular activities. Rajayoga Meditation will be offered as a subject for the post graduate students of TNTEU as part of their curriculum.

MoU was signed in the presence of Prof. Dr. N. Panchanatham, Vice-Chancellor, TNTEU; Dr. V. Balakrishnan, Registrar i/c, TNTEU; Dr. M. Soundararajan, Dean of Faculty, TNTEU; Dr.S.Mani, Director, Centre for National and International Academic Collaborations, TNTEU; Dr. A. Rajeswari, Implementing Officer & Assistant Professor, Department of Curriculum Planning and Evaluation, TNTEU; Dr. B.K. Pandiamani, Director, Value Education Programmes, Mount Abu; Dr. B.K. Muthumani, Director, Value Education Programmes, Adyar, Chennai & B.K.Vasundaradevi, Program Co-ordinator, Value Education Programmes, Adyar, Chennai.

Inauguration of Centre for Academic Research (CARE), A Unit of Brahma Kumaris at Shantivan in presence of Rajyogi Dr. B.K. Mruthyunjaya; Rajyogini B.K. Sheilu; Rajyogi Dr. B.K. Pandiamani; Dr. R.P. Gupta; BK Jayakumar and others.

पांच दिवसीय राजयोगी किड्स विंटर कार्निवाल का आयोजन

मानसरोवर (आबू रोड)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मानसरोवर में कुछ महीने पहले नौनिहालों का जमघट लगा था। ये नन्हे-मुन्ने बच्चे सर्दी की छुट्टियां मनाने नहीं बल्कि अपने जीवन में सर्वांगीण विकास के लिए **पाँच दिवसीय राजयोगी किड्स विन्टर कार्निवाल** कार्यक्रम में भाग लेने पहुंचे थे।

कार्यक्रम के दौरान बच्चों को सम्बोधित करते हुए शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष बीके मृत्युंजय ने कहा कि आज के दौर में बच्चों के अंदर संस्कार भरना जरुरी होता है। ये बच्चे ही आने वाले नये भारत की तस्वीर पेश करेंगे। आज कल की युवा पीढ़ी कई तरह की चुनौतियों से गुजर रही है। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि हम उनकी संभाल करें और उनका ख्याल रखें। इसमें माता-पिता की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। इसके लिए इनके बचपन को संवारने का प्रयास करना चाहिए। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में नन्हें-मुन्हें बच्चों को सर्वांगीण विकास के साथ-साथ राजयोग ध्यान और नैतिक मूल्यों के लिए भी प्रेरित किया जाता है।

कार्यक्रम में दिल्ली से आयी मशहूर आर्टिस्ट संगीता राज ने कहा कि जैसे हम किसी कला के लिए बड़े ध्यान से दिन-रात मेहनत करके एक चित्र तैयार करते हैं। उसी तरह से इन बच्चों पर दिन-रात मेहनत करने की जरुरत है ताकि वे एक श्रेष्ठ और सुन्दर इंसान बन सके। उनके अन्दर मूल्यों को भी ऐसे ही गढ़ना चाहिए। जैसे कि हम कला के माध्यम से रंग भरते हैं।

महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका बीके डॉ. सविता ने कहा कि बच्चे दिल के सच्चे होते हैं। जो उनके दिल पर इस समय लिख दिया जायेगा, वे हमेशा अमिट हो जाता है। वे ही उनके जीवन का हिस्सा हो जाता है।

शिक्षा प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका बीके शिविका ने कहा कि हम भी जब बच्चे थे, तब इस तरह के कार्यक्रमों में आते थे। इससे ही हमारे श्रेष्ठ जीवन की नींव पड़ी। आज के बच्चे कल के भविष्य है। इन पर बहुत ध्यान देने की जरूरत है। दिल्ली से आयी बीके नेहा, अजमेर से आयी बीके योगिनी, जयपुर से आयी बीके एकता, बीके राजीव समेत कई लोगों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये।

इस विंटर कार्निवाल में पांच दिनों तक अलग-अलग गतिविधियां करायी गयीं जिसमें खेलकूद, सांस्कृतिक प्रतियोगिता, बौद्धिक प्रतियोगिता, वाक प्रतियोगिता, जलेबी रेस, सेक रेस तथा राजयोग ध्यान शामिल हैं। इस कार्निवाल में आये बच्चों को दो ग्रुपों में जैसे- 11 से 14 साल तक एंजिल तथा 14 से 16 साल तक के बच्चों को डायमंड ग्रुप में बांटा गया था। अलग-अलग ग्रुप के बच्चों के लिए अलग-अलग प्रतियोगिता आयोजित की गयी थी।

शांतिवन (आबू रोड)। शिक्षा प्रभाग द्वारा कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों के छात्रों एवं शिक्षकों की सेवाओं के लिए तैयार की गई राजयोग थॉट लेबोरेटरी एक अनोखी संकल्पना है, जिसे वर्ष 2016 में आरम्भ किया गया। मुख्यालय शांतिवन में 1 से 3 जुलाई, 2022 तक राजयोग थॉट लेबोरेटरी सेवाओं के लिए प्रशिक्षण और वर्कशॉप कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया, जिसमें 300 से अधिक बी.के. प्रतिभागियों ने भाग लिया।

तीन दिवसीय शिक्षा प्रभाग का राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

जयपुर (राजस्थान)। ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग एज्युकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के शिक्षा प्रभाग का तीन दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन (25 से 27 नवंबर, 2022) पीस पैलेस, मुरलीपुरा, जयपुर में आयोजित किया गया। इसमें देशभर से 100 से अधिक प्रभाग से जुड़े विद्वानों ने भाग लिया। तीन दिन तक सभी विद्वानों ने गहन चिंतन-मनन कर निष्कर्ष निकाला कि यदि युवा पीढ़ी और बच्चों को मूल्यों से जोड़ना है, तो अनिवार्य रूप से इसके लिए उन्हें एकेडमिक सेशन में यह शिक्षा किसी न किसी रूप में देनी होगी।

तीन दिवसीय अधिवेशन में पहली से आठवीं तक के बच्चों को कहानियों, खेल-खेल में मूल्य शिक्षा देने पर जोर दिया गया। वहीं 8वीं से 12वीं तक के बच्चों को मेडिटेशन का महत्व बताने, याददाश्त बढ़ाने, सफलता प्राप्त करने के गुर बताने पर भी विशेष रूप से जोर दिया गया। कॉलेज- यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों को सफल जीवन, विद्यार्थी जीवन का सदुपयोग और आध्यात्मिक शिक्षा देने पर भी चर्चा की गयी। इस अधिवेशन में पीएचडी डिग्रीधारी, रिसर्चर, कॉलेज-यूनिवर्सिटी प्रोफेसर, लेक्चरर, प्राचार्य और स्प्रिचुअल कांउन्सलर इत्यादि ने भाग लिया।

Glimpses of Education Wing Services in Different Places

From Left: BK Archana, Microbiologist, Former Scientist BK Dilip Shrivastava (DRDO), BK Sudesh, Regional Coordinator, Thought Lab, Maj. Gen. Om Prakash (Retd.), BK Shubham Mehta, Software Engineer at Accenture, BK Akansha Tikoo, Software Engineer at Gemini Solutions after conducting exam on " Innovative Thinking & Positivity".

BK Kiran, Regional Convener of VES, presented a booklet on Brahma Kumaris' concept of peace to Mr. Kailash Satyarthi during the convocation ceremony of RKDF University, Madhya Pradesh. Hon'ble Mr. Kailash Satyarthi, Nobel Peace Prize winner, senior social worker and thinker, was the Chief Guest of the convocation.

On April 16th, the 3rd Sunday of the month, all the participants of the **University and Educators' Conference** on **"Educators - The Architects of Future Generation"** joined for the **World Peace Meditation** at Dadi Janki Park in Gyan Sarovar, Mount Abu. More than 300 Educators from different parts of India participated in this conference.

Glimpses of Education Wing Services in Different Places

MoU with Rotary India Literacy Mission

An MoU was signed between Rotary India Literacy Mission and Education Wing (RERF) during Rotary India Centennial Summit 2020 on 16th of February, 2020 at Biswa Bangla Convention Centre, Kolkata with the aim to work together in the area of education (Adult Education, Creating Happy Schools and e-Learning).

Rajyogi Dr. BK Mruthyunjaya, Chairperson, Education Wing and Mr. Kamal Sanghvi, Rotary International Director signed the MoU. Also present were Mr. Shekhar Mehta, President, Rotary International (2021-22), Dr. SP Singla, Past Governor of Rotary India, Mr. Ravi Langer, Past Governor of Rotary, Mr. Ramesh Chandra, Past District Governor, Rotary International, Dr. BK Pandiamani, Director, Distance Value Education Courses, Shantivan, BK Asmita Behn, BK Padma Behn and other Rotary Members.

Brother BK Mruthyunjaya addressed the audience explaining the value education services of Education Wing and also felicitated Mr. Kamal Sanghvi Ji and Mr. Shekhar Mehta.

Brother BK Mruthyunjaya, Dr. BK Pandiamani ji & BK Neha giving Godly Gift to Prof. Dr. D.P. Singh, Chairman of UGC.

BK Shukla didi presenting Godly Gift to Prof. Dr. DP Singh, the then UGC Chairman and his wife Dr. Kalpana

अविनाश समरसिंग कुमावत
जलगाँव (महाराष्ट्र)

राजयोग एवं स्वस्थ जीवनशैली

स्वास्थ्य अर्थात् स्व में स्थित व्यक्ति ही सम्पूर्ण स्वस्थ होता है। लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागृति निरंतर बढ़ रही है। लोग अपने स्वास्थ्य को ठीक बनाये रखने तथा बीमारियों से मुक्त रहने के लिए योगाभ्यास, ध्यानाभ्यास, सम्मोहन विधि, सामूहिक परामर्श, प्राकृतिक चिकित्सा, मानसिक प्रबन्धन तथा सकारात्मक चिन्तन जैसी विभिन्न विधियों का सहयोग ले रहे हैं।

स्वास्थ्य हरेक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। स्वास्थ्य एक ऐसा बहुमूल्य खज़ाना है जिसको प्रभाव या पैसे से नहीं खरीदा जा सकता है। स्वास्थ्य न केवल एक व्यक्तिगत कीमती सम्पत्ति है बल्कि यह पूरे समुदाय की शक्ति का संसाधन है जिसे स्वस्थ जीवनशैली को अपनाकर प्राप्त एवं अनुरक्षण किया जा सकता है। दूषित जीवनशैली अपनाकर स्वास्थ्य को नष्ट भी करना सम्भव है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने स्वास्थ्य को इस प्रकार परिभाषित किया है कि "स्वास्थ्य व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से पूर्ण आयाम है। स्वास्थ्य केवल बीमारियाँ या दुर्बलता की अनुपस्थिति मात्र नहीं है।"

शारीरिक स्वास्थ्य समुद्र में तैरते हुए हिमखण्ड के समान होता है। समुद्र में तैरते हुए विशाल हिमखण्ड का बहुत ही थोड़ा अंश प्रेक्षकों को दिखाई देता है। इसलिए केवल बाहरी शारीरिक बनावट के आधार पर स्वास्थ्य के बारे में अनुमान लगाना व्यर्थ है।

मानसिक स्वास्थ्य केवल मानसिक बीमारियों का अनुपस्थिति मात्र नहीं बल्कि वह व्यक्तित्व-विकास और भावनात्मक प्रवृत्तियों में सन्तुलन है जो उसे अन्य लोगों के साथ सामंजस्यपूर्वक रहने के योग्य बनाती है। मनोवैज्ञानिक स्थिरता अभी भी प्रायः रहस्य जैसी है क्योंकि या तो इसके महत्व को ठीक प्रकार से समझा नहीं गया है या इसको मजबूत करने की यथार्थ विधि अभी तक ज्ञात ही नहीं हुई है।

कार्य में आनन्द की कमी, असुरक्षा की भावना, खराब मानवीय सम्बन्ध और भावनात्मक अस्थिरता कुछ ऐसे मनो-सामाजिक कारक है जो नौकरी करने वाले लोगों के स्वास्थ्य पर बहुत ही नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। वर्तमान समय से यह अनुभव किया जा रहा है कि लोगों के स्वास्थ्य की दशा में सुधार लाने के लिए स्वास्थ्य के मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक आयाम को विशेष महत्व देना आवश्यक है। दवा के अतिरिक्त रोगों के निदान के अन्य वैकल्पिक उपायों को अधिक लोकप्रिय बनाना आवश्यक है। साधारण लोगों को स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं के सम्बन्ध में शिक्षित करना आवश्यक है।

सभी प्रकार के स्वास्थ्य हेतु रामबाण औषधि है **राजयोग (ध्यानाभ्यास)**। राजयोग विश्व की सबसे प्राचीन ध्यानाभ्यास की पद्धति है। राजयोग की प्राचीन ध्यानाभ्यास की पद्धति को कई प्रचारकों ने अपने-अपने देश से परिवर्तन करके इसे प्रस्तुत किया है। कुछ राजयोग का अभ्यास बैठकर, कुछ खड़े होकर तथा कुछ टहलते हुए करने का सुझाव देते हैं। आज के समय, जबकि राजयोग के विषय में इतनी सब भिन्न-भिन्न विचारधाराएं बन चुकी हैं, ऐसे में राजयोग की सही ध्यानाभ्यास की पद्धति का चयन करना मनुष्य के लिए एक चुनौती से कम नहीं है। ध्यानाभ्यास अर्थात् मेडिटेशन शब्द की उत्पत्ति 'लेटिन' भाषा से हुई है जिसका सम्बन्ध सभी प्रकार के शारीरिक और मानसिक अभ्यास से है।

वास्तव में राजयोग ध्यानाभ्यास परमपिता परमात्मा के साथ व्यक्तिगत स्तर पर संवाद करने की एकमात्र विधि है। इससे आत्मा को असीम शांति, पवित्रता, प्रेम और आनंद की प्राप्ति होती है। राजयोग मेडिटेशन की विधि अत्यंत सरल और वैज्ञानिक है। यह शारीरिक क्रियाओं पर आधारित हठयोग से पूर्णतः भिन्न है। इसमें शरीर को किसी प्रकार का कष्ट नहीं दिया जाता है। इसमें मन की संकल्प शक्ति से सर्वोच्च सत्ता परमात्मा से मानसिक सम्बन्ध जोड़कर आत्मा में पुनः गुणों और शक्तियों का संचार किया जाता है। इस विधि को मनोविज्ञान की भाषा में 'टेलिपेथी' कहा जाता है। राजयोग मेडिटेशन एक ऐसी विधि है जिसका अभ्यास कर्म करते समय भी किया जा सकता है। स्वयं को इस शरीर से भिन्न चैतन्य शक्ति 'आत्मा' का अनुभव करने से कर्म व्यवहार में रहते भी परमात्मा की याद स्वतः रहती है। राजयोग के अभ्यास में एक परमपिता परमात्मा के साथ मन-बुद्धि का योग रखने से मानसिक एकाग्रता और आत्म-विश्वास में वृद्धि होती है। राजयोग का मस्तिष्क की क्रियाओं पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अनुसंधानों से यह प्रमाणित हुआ है कि राजयोग मनो-दैहिक बीमारियों जैसे रक्तचाप, अनिद्रा, वायुविकार, मधुमेह और हृदय सम्बन्धी रोगों को दूर करता है। मानसिक कार्य करने वाले लोगों के लिए कार्यदक्षता और मानसिक शक्तियों में सन्तुलन बनाये रखने के लिए राजयोग एक सहज और प्रभावशाली विधि है।

राजयोग के अभ्यास में शारीरिक सम्बन्धों और पदार्थों की स्मृतियाँ बीच-बीच में व्यवधान उत्पन्न करती है। परन्तु कुछ दिनों के अभ्यास के बाद कर्म करते भी आत्मा-परमात्मा की स्मृति में रहकर कर्म करने की अभ्यस्त हो जाती है। इसे 'कर्मयोग' कहा जाता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सेवाकेन्द्रों पर राजयोग का प्रशिक्षण निःशुल्क दिया जाता है। इसको आप अपनी आवश्यकतानुसार स्वाभाविक रूप से दिनचर्या के रूप में

अपना सकते हैं।

राजयोग के अभ्यास द्वारा अष्ट मानसिक शक्तियों की प्राप्ति होती है, जिनसे मनुष्य की कर्मकुशलता बढ़ती है और वह अपनी वर्तमान क्षमता से भी अधिक सफलता प्राप्त करने के योग्य बनता है। इन अष्ट शक्तियों का सार रूप में स्पष्टीकरण इस प्रकार है-

- **समेटने की शक्ति (Power to pack up):** हमारे कार्य करते हुए मन की शक्तियों का कई दिशाओं में विस्तार हो जाता है, जिससे स्मरण और एकाग्रता की शक्ति कमजोर हो जाती है। राजयोग के अभ्यास से समेटने की शक्ति का विकास होता है जिससे मन की एकाग्रता स्वाभाविक रूप से बनी रहती है।

- **सहनशीलता की शक्ति (Power to tolerate):** जीवन में सफलता प्राप्त करने का मुख्य आधार सहनशीलता है। जैसे एक वृक्ष तूफानी हवाओं में झुककर सुरक्षित रहता है तथा पत्थर मारने पर भी मीठा फल ही देता है, उसी प्रकार सहन करने से हम व्यर्थ के विवाद से बचते हैं तथा मानसिक शक्तियाँ भी नष्ट होने से बच जाती हैं और हम जीवन में सफलता की नई ऊंचाइयों को स्पर्श करने में सक्षम बनते हैं।

- **समायोजन की शक्ति (Power to adjust):** जिस प्रकार एक कुशल नाविक समुद्र की तूफानी हवाओं के अनुसार अपनी नांव को समायोजित करते हुए अपनी मंज़िल पर पहुंच जाता है, उसी प्रकार जीवन की परिस्थितियों के अनुसार समायोजित करने से मनुष्य अनेक प्रकार की कर्मक्षेत्र पर होने वाली दुर्घटनाओं और दु:खों से बच जाता है। राजयोग से प्राप्त होने वाली विवेक-शक्ति से समायोजन करने की कला जीवन में आ जाती है।

- **परखने की शक्ति (Power to discriminate):** जैसे सूक्ष्मदर्शी (microscope) की सहायता से भौतिक सत्य का परीक्षण किया जाता है, उसी प्रकार सामने वाले मनुष्य के मन के भीतर की सत्यता को परखने की शक्ति राजयोग द्वारा हममें विकसित होती है।

- **निर्णय करने की शक्ति (Power to decide):** सही समय पर सही निर्णय लेने से सफलता का सफर आसान हो जाता है। निर्णय शक्ति के ठीक समय पर कार्य न करने से ही जीवन में समस्याएं उत्पन्न होती हैं और राजयोग से निर्णय शक्ति प्रखर और यथार्थ होती है।

- **सामना करने की शक्ति (Power to face):** जीवन से समस्याओं से सामना तो होना ही है। समस्याएँ कुछ शिक्षा और सावधानी देने के लिए ही आती हैं। राजयोग से समस्याओं का दृढ़तापूर्वक सामना करने की शक्ति प्राप्त होती है।

- **सहयोग की शक्ति (Power to cooperate):** सहयोग लेने और देने से बड़ी-से-बड़ी समस्याओं को सहज ढंग से पार किया जा सकता है। समाज की सामूहिक सोच के सहयोग से नये समाज का निर्माण होता है।

- **विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति (Power to withdraw):** राजयोग के अभ्यास से प्राप्त हुई मानसिक शक्तियों का जीवन में प्रयोग करने से मानसिक एकाग्रता सदा बनी रहती है। कितना भी किसी कार्य में हमारी मन-बुद्धि व्यस्त रही हो, तो भी कार्य पूरा होते ही हम उससे पूरी तरह अपने मन को डिटेच करने में सक्षम बन पाते हैं।

राजयोग के द्वारा शारीरिक स्वास्थ्य में वृद्धि के लिए व्यक्ति को गहन शक्ति मिलती है, जिसका प्रभाव नाड़ीतंत्र पर होने से लाभ मिलता है। तनावपूर्ण परिस्थितियों पर नियंत्रण पाकर व्यक्ति के अंदर क्षमता का विकास होता है। जीवन में हर रोज़ की समस्याओं के समाधान हेतु अधिक ऊर्जा मिलती है। राजयोग के अभ्यास से अनेक लाभ संभव हैं जैसे-

* हमारे शरीर में निर्माण होने वाली बीमारियाँ जैसे तनाव, बेचैनी, अवसाद, भय इनको नियंत्रण के लिए सहायक है।
* राजयोग के अभ्यास द्वारा हृदय की कार्यप्रणाली सामान्य होती है।
* रक्तदाब भी सामान्य स्तर पर कम होता है।
* श्वसन प्रक्रिया धीमी रहती है।
* रोग प्रतिकारक शक्ति में बढोत्तरी।
* अनिद्रा दूर होती है।
* त्वचा की भी रोग प्रतिकारक शक्ति बढ़ती है।
* फैफड़ों में वायु का प्रवाह ठीक हो जाता है, अस्थमा रोगियों को लाभ मिलता है।
* अलर्जी/ऑर्थराइटिस इनमें भी लाभ मिलता है।
* शरीर पर यदि कोई सर्जरी हुई हो तो उसके बाद राजयोग का प्रभाव पड़ने से अधिक लाभ मिलता है।

जीवन को रहस्यमय कहा जाता है परन्तु राजयोग के अभ्यास द्वारा प्राप्त आध्यात्मिक विवेक से जीवन के रहस्यों का स्पष्टीकरण हो जाता है। इससे जीवन रहस्य के बजाय एक व्यवस्थित ढंग से चलने लगता है और जीवन-यात्रा सहज और शक्तिशाली बन जाती है।

'राजयोग' विश्व की सबसे प्राचीन ध्यानाभ्यास की पद्धति है एवं सभी प्रकार के स्वास्थ्य हेतु रामबाण औषधि है।

राजयोगिनी मोहिनी दीदी और राजयोगिनी जयंती दीदी को डॉक्टरेट की उपाधि से नवाजा गया

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बीके मोहिनी दीदी और बीके जयंती दीदी को डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की गई। शांतिवन के डायमंड हाल में आयोजित गरिमामय समारोह में मणिपुर इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. हरि कुमार, टेक्निकल ऑफिसर प्रो. राजेश पी चिन्तवाड़ी, रजिस्ट्रार प्रो. हंसराज श्रीवास्तव और प्रो. देवेश वारी देवी ने यह उपाधि प्रदान करते हुए प्रमाण पत्र प्रदान किया।

वाइस चांसलर डॉ. हरि कुमार ने कहा कि आज हमें बहुत प्रसन्नता हो रही है कि मानवता की सेवा, नारी सशक्तिकरण, जन कल्याण, आध्यात्म और राजयोग के प्रचार-प्रसार में अपना पूरा जीवन समर्पित कर लाखों लोगों की प्रेरणास्रोत बनीं। आप लोगों का जीवन योग और राजयोग की मिसाल है। आपके मार्गदर्शन और जीवन को देखकर अनेक लोगों का जीवन बदला है। ऐसी महान विभूतियों को यह डिग्री प्रदान करना हमारे लिए गौरव का विषय है।

वैल्यू एजुकेशन प्रोग्राम के डायरेक्टर डॉ. पांड्यामणि ने कहा कि संस्थान के शिक्षा प्रभाग द्वारा देशभर के अलग-अलग विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर मूल्य एवं आध्यात्म शिक्षा के पाठ्यक्रम और डिग्री कोर्स चलाए जा रहे हैं। इस मौके पर संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके डॉ. मृत्युंजय, मणिपुर यूनिवर्सिटी के टेक्निकल ऑफिसर प्रो. राजेश पी चिन्तवाड़ी, रजिस्ट्रार प्रो. हंसराज श्रीवास्तव और प्रो. देवेश वारी देवी सहित बड़ी संख्या में बीके भाई-बहन मौजूद रहे।

Value Added Course conducted by BK Vikas, BK Manisha, BK Satish, BK Pavan, BK Dr. Manisha at Commerce, Management and Computer Science (CMCS) College, Nashik.

Rajyogi Dr. BK Mruthyunjaya presenting Godly Gift to Hon'ble Commander Dr. Bhushan Dewan, Former VC, Shridhar University, Pilani during the University and College Educators' Conference at Gyan Sarovar, Mt. Abu

प्रार्थना

आओ मिलकर करें प्रार्थना, शीश झुकाकर करें वंदना
ईश्वर सब पर करें इनायत, सबके दिल में हो प्रेम-भावना।

अहम् क्रोध और मोह लोभ के, नरक से दूर रहे हरदम
धन-यौवन-जीवन क्षण भंगुर, हमको याद रहे हरदम
हरी-भरी हो धरती अपनी, सबके सुख की करें कामना
ईश्वर सब पर करें इनायत, सबके दिल में हो प्रेम-भावना

जात-धरम में जो भेद बताये, उससे बचकर रहना है
सत्य, अहिंसा और मानवता, की राहों पर चलना है
सब तन-मन से रहें निरोगी, आओ ऐसी करें कामना
ईश्वर सब पर करें इनायत, सबके दिल में हो प्रेम-भावना।

हाथ जोड़ माँ सरस्वती से, शिक्षा का वर पाना है
भारत के विधान में दिए, कर्तव्यों को निभाना है
आओ पावन शिक्षा पाकर, सीखें जीवन सफल बनाना
ईश्वर सब पर करें इनायत, सबके दिल में हो प्रेम-भावना।

आओ मिलकर करें प्रार्थना, शीश झुकाकर करें वंदना
ईश्वर सब पर करें इनायत, सबके दिल में हो प्रेम-भावना।

डॉ. अमित कुमार
हरियाणा

मैं पढ़ रहा हूँ

खुदा को है पाया जबसे, खुद ही खुद से लड़ रहा हूं
मर-मर के जी रहा था, अब जीते-जी मर रहा हूं
खुदा से खुद को ही पाकर, आज खुद से खुदा संग चल रहा हूं
नामो-निशान तक ना था, जिस बात का आज बात वही मैं कर रहा हूं
मैं पढ़ रहा हूं, मैं पढ़ रहा हूं...

गजब की पाठशाला है, यह अजब ही पढ़ाई है
दुनिया को तो रहम है, पर खुद से रोज लड़ाई है
लड़ाई भी ऐसी जिसमें खून ना कत्लेआम है
ना भाला है ना खंजर है, यहां तो बहता बस ज्ञान है
गिरते-गिरते ही सही, पर मैं ऊपर चढ़ रहा हूं
मैं पढ़ रहा हूं, मैं पढ़ रहा हूं...

ना आवाज का शोर है, ना ही कोई तन्हाई है
किस पर चीखूं किस पर चिल्लाऊं, सभी तो मेरे भाई हैं
रिश्ता भी कोई इस जन्म का नहीं, यह जन्मों पुराना नाता है
कल्प पहले भी मिले थे हम, अभी भी मिलना आता है
मिलन हुआ है अपनों से, कि गैरों से बिछड़ रहा हूं
मैं पढ़ रहा हूं, मैं पढ़ रहा हूं...

बस एक शब्द में ही सारा जादू समाया है
चलते-फिरते उठते-बैठते, जाने कितने गधों को बाप बनाया है
मोह-माया के चंगुल ने, हमें भी गधा बनाया है
पर फिर भी मुझसे मिलने, मेरा सच्चा बाप आया है
श्रीमत पर परमात्मा के चलने की कोशिश मैं कर रहा हूं
मैं पढ़ रहा हूं, मैं पढ़ रहा हूं...

सम्मुख बैठा मैं अपने बाप के, खत्म करने खाते अपने पाप के
बाप कहे यूं ही चलते रहो बस, क्योंकि वर्सा मिलता है पूरा नाप के
ऊंची श्रीमत के ज्ञान से, ऊंचा दर्जा में गढ़ रहा हूं
मैं पढ़ रहा हूं, मैं पढ़ रहा हूं...

कुछ दिन ही बाकी हैं कुछ पल ही शेष हैं
काम-क्रोध-लोभ-मोह-अहंकार यह माया के भेष हैं
टंगने वाला है टू लेट का बोर्ड भी जल्द ही
लास्ट-सो-फास्ट, फास्ट-सो-फर्स्ट वाला व्यक्ति ही विशेष है
इसी गुण को धारण करने की कोशिश कर रहा हूं
मैं पढ़ रहा हूं, मैं पढ़ रहा हूं...

चल-चल रे साथी अब यह कपड़े हुए पुराने
बीते कई युग बीते, कई जन्म बीते, कई जमाने
यूं ही ठोकर खाई जन्मों की, यूं ही ढूंढा तुझको दर-दर
तूने खुद ही पहचाना और दिया है झोली भर-भर
ज्ञान के सागर में गहरे में उतर रहा हूं
मैं पढ़ रहा हूं, मैं पढ़ रहा हूं...

बी.के. हितेश धवन, दिल्ली

SPIRITUALITY IN EDUCATION - COMPASSION AND KINDNESS

Manomohninivan (Abu Road): Inauguration of the **University & College Educators' Conference "Spirituality in Education - Compassion and Kindness"** held from 12th to 16th August, 20223 at Manmohinivan, Abu Road in presence of Rajyogini BK Dr. Nirmala Didi, Rajyogini B.K. Sheilu, Rajyogi BK Mruthyunjaya, Rajyogi Dr. B.K. Pandiamani, Rajyogini B.K. Suman and others. Hon'ble attendees of the **University & College Educators' Conference** held at Manmohinivan, Abu Road.

Education Wing HQs. Office:
Dr. B.K. Mruthyunjaya
Chairman, Education Wing, RERF
Brahma Kumaris, Education Wing Office
3rd Floor, Anand Bhawan, Shantivan
Abu Road - 307 510 (Raj.)
Mobile Nos.: +91 94140-03961 / +91 94263-44040
E-mail: educationwing@bkivv.org
Website: educationwing.com

To,